फिजुल बहेस से बचा कीजये

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आजकल अंग्रेजी तालीम पाने वाले हजरात जो दीनी तालीम से नावाकिफ हे वो बहेस और तहकीक मे शरियत की हदो का पास व लिहाज नही रखते, चाहे मसला समझे जाने के काबिल हो या ना हो, हर शख्स उसकी हकीकत जानना चाहता हे, हालाकी बहेस और तहकीक का एक मेदान हे जिससे बाहर नही निकलना चाहिये, और अगर कोई उससे बाहर निकलना चाहे तो उसे रोक देना चाहिये,

लोगो ने जब नबी करीमﷺ से रूह की हकीकत दरयाफ्त की थी तो कुरान ने बहुत ही मुख्तसर सा जवाब दिया कि वो मेरे रब के हुकम से एक चीझ हे उस्के बाद ये कह कर तफसील पेश करने से इन्कार कर दिया कि तुम्हे जो इल्म दिया गया हे वो बहुत ही थोडा हे, यानी तुम इस बहेस को नही समझ सकते, कुरान की बहुत सी सुरतो के शुरू मे हूरूफे मुक्तआत हे जिनके मतलब के पीछे पडने से रोक

दिया गया हे, और मोमीन को अमली तौर पर मशक करवायी गई हे.

एक शेर का तरजुमा- हर जगह बहेस का घोडा नही दोडाना चाहिये, किसी जगह तहकीक के हथियार डाल देने चाहिये

हजरत अबु हूरेरा (रदी) बयान करते हे नबी करीमﷺ ने फरमाया लोग बराबर एक दुसरे पूछते रहेगे यहा तक कि कहा जायेगा कि काइनात को तो अल्लाह ने पैदा किया हे, मगर अल्लाह को किसने पैदा किया हे (नउजुबिल्लाह), जो शख्स ऐसी बात महसूस करे उसको कहना चाहिये 'आमन्तु बील्लाहि व रसुलिही, मे अल्लाह और उस्के नबी करीमﷺ पर ईमान लाता हू'. (बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात).

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.